ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 14

➡ ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

भारतीय संस्कृति में विद्या की परिभाषा है **'सा विद्या या विमुक्तये'** अर्थात् विद्या वह है जिसके द्वारा हमें अपने विकारों एवं कमियों से मुक्ति मिले। भारत के उच्चतम न्यायालय ने एक जजमेन्ट में विद्या की परिभाषा बताई कि विद्या वो है जो चार दीवारों के अन्दर सिखाई जाये। एडम स्मिथ ने विद्या की परिभाषा दी कि विद्या वो है जिसके आधार पर हम कमाई कर अपना और अपने परिवार का जीवन निर्वाह कर सकें। इस बात का परिवर्तन करने के लिए भारत की संसद ने 1986 में एक एज्युकेशन पॉलिसी बनाई और उसमें शिक्षा की नई परिभाषा बनाई जिसमें लिखा है कि विद्या वो है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति कर सके अर्थात् आध्यात्मिक उन्नति के ज्ञान को भी विद्या कह सकते हैं। विद्या के बारे में अनेक लेखकों ने लिखा हुआ है। एक लेखक ने लिखा है कि बीसवीं सदी में अनपढ़ उसे कहते थे जो लिखना पढ़ना नहीं जानता था परंतु इक्कीसवीं सदी में अनपढ़ उसे कहा जाता है कि पढ़ाई के बाद भी जिस व्यक्ति के कार्य व्यवहार में तथा जीवन में परिवर्तन नहीं होता है। पढ़ाई

का मुख्य लक्ष्य व्यक्ति को जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाना है।

किसी ने कहा है कि जीवन ऐसे व्यतीत करो जैसे कि आपको कल शरीर छोड़ना है परंतु शिक्षा ऐसे ग्रहण करो कि आपको सौ साल तक जीना है। इसी प्रकार किसी ने कहा है कि भौतिक ज्ञान के द्वारा जीवन निर्वाह कर सकेंगे परंतु आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा सही मायने में जीवन जी सकेंगे अर्थात् आध्यात्मिकता व्यक्ति को जीवन जीने की कला सिखाती है।

आदर्श जीवन व्यवहार एवं ईश्वरीय कारोबार में लक्ष्य का होना बहुत ज़रूरी है। यह लक्ष्य हमारे सामने बहुत ही क्लीयर अर्थात् स्पष्ट होना आवश्यक है। इसे दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जितना हमारे सामने लक्ष्य स्पष्ट होगा उतना ही हम लक्ष्य प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर सकेंगे। यह उद्देश्य एवं लक्ष्य कितना स्पष्ट हो सकता है वह शिवबाबा ने साकार ब्रह्मा बाबा को दिव्यदृष्टि के द्वारा स्पष्ट किया। ब्रह्मा बाबा ने जो साक्षात्कार किया उसका स्वयं वर्णन करके बताया। मैं उनकी जो भावना एवं अनुभव है वह तो नहीं लिख सकता परंतु चंद शब्दों में बता रहा हूँ कि पहले तो उन्हें नज़र आया कि खून की नदियाँ बह रही थीं, मनुष्य एक-दूसरे को मारकाट रहे थे तो कहीं बम फट रहे थे, पाँचों तत्वों का रौद्र रूप नजर आ रहा था, इस भयानक दृश्य

को देख ब्रह्मा बाबा डर गये, उसके बाद शिवबाबा ने उन्हें दूसरा दृश्य दिखाया। इस दृश्य में बाबा ने देखा कि आकाश से सितारे धरती पर उतर रहे थे और नीचे आकर वे देवी देवता बन रहे थे। सतयुगी सृष्टि का यह नज़ारा देखने के बाद ब्रह्मा बाबा बहुत खुश हुए। फिर ब्रह्मा बाबा ने आकाशवाणी सुनी कि नई सृष्टि की स्थापना एवं विश्वपरिवर्तन के महान कार्य के लिए उन्हें निमित्त बनना है। ईश्वरीय कार्य क्या है, इसके लिए उन्हें क्यों निमित्त बनाया है, इसका कारोबार कैसे होगा – यह सब बातें शिवबाबा ने शुरूआत में ही स्पष्ट की। मम्मा और बाबा नई दुनिया में श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण बनेंगे इस प्रकार का लक्ष्य उन्हें पुरुषार्थ करने के लिए दिया। इस प्रकार लक्ष्य स्पष्ट होने से हम श्रेष्ठ पुरुषार्थ कर सकते हैं।

जब लक्ष्य स्पष्ट नहीं होता तो मन में दुविधा होती है कि पुरुषार्थ करें या ना करें? महाभारत में जैसे कि दिखाया गया है कि अर्जुन को भी दुविधा हुई कि वह युद्ध करे या ना करे, इस दुविधा के कारण अर्जुन अपने शस्त्र त्याग रथ में बैठ गया। तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उसका लक्ष्य स्मरण कराया जिससे अर्जुन का मोह भंग हुआ और वह युद्ध के लिए तैयार हुआ।

ऐसे ही पश्चिम की दुनिया में शेक्सपियर ने एक ड्रामा लिखा जिसका नाम है हैमलेट। इस ड्रामा का जो मुख्य पात्र है हैमलेट वह हमेशा दुविधा में रहता है कि करूँ या ना करूँ (To do or not to do) क्योंकि उसके सामने लक्ष्य स्पष्ट नहीं था। लेकिन बाबा ने हम बच्चों के सामने सदा ही हमारा लक्ष्य स्पष्ट रखा है कि हमें नई दुनिया में देवी-देवता बनना है। बाबा ने कहा है कि ऐसे श्रेष्ठ एवं पूज्य पद की प्राप्ति करने के लिए ऐसा श्रेष्ठ पुरुषार्थ करेंगे तो अवश्य ही तुम्हे ऊँच पद मिलेगा।

ज्ञानमार्ग एवं भक्तिमार्ग में यही फर्क है कि भक्तिमार्ग में कोई भी लक्ष्य स्पष्ट नहीं होता है पर ज्ञानमार्ग में लक्ष्य स्पष्ट होता है। उदाहरण के लिए रामगीता (श्रीराम एवं ऋषि वशिष्ठ के बीच का संवाद) में ऋषि वशिष्ठ स्पष्ट कहते हैं कि जीवन में पुरुषार्थ एवं तपस्या के पाँच जन्म के बाद ही मुक्ति मिलती है और इसके दो जन्मों के बाद जीवनमुक्ति मिलेगी। परंतु हम बाबा के ज्ञान के अनुसार जानते हैं कि ब्रह्मा बाबा ने करीब 32 साल पुरुषार्थ किया और सृष्टि रंगमंच पर पहले ऐसे व्यक्ति बने जिन्होंने सम्पूर्णता को प्राप्त किया। इस प्रकार स्पष्ट है कि 32 वर्ष के पुरुषार्थ के आधार पर मुक्ति और जीवनमुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। शिवबाबा ने हम बच्चों को बताया है कि सभी आत्माओं को मुक्ति ज़रूर मिलेगी और वे सभी परमधाम में जाकर रहेंगे। परंतु जिन आत्माओं ने शिवबाबा को पहचाना है और पुरुषार्थ किया है उन सभी आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति दोनों मिलेंगी अर्थात् ये आत्मायें परमधाम जाकर वापिस नई सृष्टि पर राज्य करने आयेंगे जहाँ पर सम्पूर्ण सुख, शान्ति एवं आनंद की प्राप्ति होगी।

मैंने विभिन्न धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया है जिससे यह मालूम पड़ा कि किसी भी धर्मस्थापक ने जीवन का कोई ऐसा लक्ष्य स्पष्ट नहीं किया है और ना ही बताया है जैसा कि हमारे बाबा ने हमारे सामने स्पष्ट किया है। लक्ष्य सामने स्पष्ट ना होने के कारण मार्ग भी स्पष्ट नहीं है और जब मार्ग स्पष्ट नहीं है तो भटकना पड़ता है और यह भटकने का जीवन कैसा होता है, यह आप, हम सब जानते हैं, 63 जन्म हम ऐसे ही भटकते आये हैं। ब्रह्मा बाबा भी अपने लौकिक जीवन में कई गुरु-गोसाइयों आदि के पास गये और ज्ञान लिया परंतु सत्य ज्ञान शिवबाबा से ही मिला।

योग द्वारा अष्टशक्तियों की प्राप्ति होती है जैसे कि परखने की शक्ति से हम योग्य व्यक्ति को पहचानते हैं और निर्णय शक्ति द्वारा हम यथार्थ निर्णय कर सकते हैं। मैनेजमेन्ट गुरुओं ने भी लिखा है कि शिक्षा का अर्थ होता है,

'To appoint right person for the right job and then be free from tension' अर्थात् योग्य कार्य के लिए योग्य व्यक्ति को नियुक्त करने से तनावमुक्त बनेंगे। योग्य कार्य के लिए योग्य व्यक्ति ढूँढ़ने के लिए बहुत परखशक्ति चाहिए। अगर अयोग्य व्यक्ति को रखते हैं तो वह कार्य सफल नहीं होता है और हमारा लक्ष्य पूरा नहीं होता है। इसी प्रकार निर्णय शक्ति भी बहुत जरूरी होती है। बाबा हम बच्चों को यज्ञ कारोबार में निर्णय शक्ति बढ़ाने के लिए कहते हैं। जब हमारे में ज्ञान अच्छी रीति होगा तब ही हम अपने यथार्थ अनुभव के आधार पर योग्य निर्णय कर सकेंगे और आगे बढ़ सकेंगे। ज़ोन, सब-ज़ोन, सेवाकेन्द्र, उप-सेवाकेन्द्र, गीता पाठशाला तथा यज्ञ का संचालन करने के समय निर्णय शक्ति का होना बहुत आवश्यक होता है। हम कह सकते हैं कि योग्य अनुभव एवं निर्णय शक्ति के आधार पर हम श्रेष्ठ कारोबार कर सकते हैं। मैं अपने अनुभव से लिखता हूँ कि मेरे पास निर्णय शक्ति नहीं थी तथा अनुभव भी नहीं था इसलिए पहले हम हर बात के लिए बार-बार बाबा के पास संदेश भेजते थे। परंतु धीरे-धीरे प्यारे बाबा की याद ने हमारी निर्णय शक्ति बढ़ाई और अभी अधिकतर हमें ही निर्णय लेने पड़ते हैं।

आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी ने ज़मीन/भवनों की खरीद/सौगात में लेने की ज़िम्मेदारी हमें दी थी। शुरू में तो मैं सब बातें दादीजी से पूछकर करता था। एक बार दादीजी ने मुझे स्पष्ट कहा कि आप हमें पूछते क्यों हो? बाबा ने जब आपको जिम्मेदारी दी है तो आप हिम्मत रखो और कार्य करो, बाबा ज़रूर गाइड करेगा। यही बात प्यारे ब्रह्मा बाबा ने हमें सिखाई। जब वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट की स्थापना हुई तो मुझे उसका मैनेजिंग ट्रस्टी बनाया तब मैंने बाबा को कहा था कि बाबा मुझे ट्रस्ट चलाने का अनुभव नहीं हैं तो बाबा ने मुझे कहा कि जब भी कोई बात हो, शिवबाबा को याद करो और ऐसे समझो कि कल्प पहले भी मैंने इस कार्य को किया था। इस प्रकार बाबा से मार्गदर्शन मिलेगा और आप सही निर्णय कर सकेंगे। इस प्रकार से मैंने ब्रह्मा बाबा का मार्गदर्शन स्वीकार किया और यथार्थ निर्णय करता गया। यह अनुभव मुझे विदेश सेवा में बहुत काम आया।

सन् 1971 में जब हम विदेश सेवार्थ गये तो उस समय हमारे पास केवल 6 डॉलर थे और उसी में सारा कारोबार करना था। हमारा स्वयं का खर्चा, सेवा आदि के लिए खर्चा सब उसमें ही करना था। जब हम न्यूयॉर्क से आगे सेवार्थ गये तब हमारे दो ग्रुप बने। एक ग्रुप में शीलइन्द्रा दादी, रोजी बहन तथा जगदीश भाई थे और दूसरे ग्रुप में मैं, ऊषा जी तथा डॉ. निर्मला थे। ये दोनों ग्रुप अलग-अलग दिशाओं में गये और फिर सभी हांगकांग पहुँचे। तब हमारे पास शीलइन्द्रा दादी जैसी संदेशी नहीं थी और मधुबन में भी फोन करके मार्गदर्शन नहीं ले सकते थे क्योंकि हम आर्थिक रूप से कमज़ोर थे। ऐसे समय पर हमने आत्मिक शक्ति एवं अनुभव के आधार पर ही सेवा की और निर्णय लिये। नॉर्थ अमेरिका में कैनेडा, टोरन्टो, शिकागो एवं सैनफ्रान्सिस्को आदि स्थानों पर सेवा कर बाबा का संदेश दिया।

जब लक्ष्य स्पष्ट होता है तो पुरुषार्थ भी श्रेष्ठ और सहज हो जाता है और कम समय में कार्य हो सकता है इसलिए मैनेजमेंट के कारोबार में भी स्पष्ट लक्ष्य तथा लक्ष्य में दृढ़ता का होना ज़रूरी है।

इस लेख द्वारा आप सभी से यही निवेदन है कि जीवन में अपने लक्ष्य को स्पष्ट रखो तो निर्णय भी यथार्थ होगा और श्रेष्ठ कारोबार कर सकेंगे। संगमयुग के इन्हीं अनुभवों के आधार पर हम आगे भी अटल, अखण्ड और निर्विघ्न कारोबार कर सकेंगे। 😊

ऐसे खुशनुमा बनो जो मन की खुशी सूरत से स्पष्ट दिखाई दे